Date. 22/08/2020

B.A part - 2 Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

मिल के उपयोगितावाद की व्याख्या करें ?

Ans. जेम्स मिल के प्रयासों तथा बेन्थम के प्रति श्रद्धा ने मिलकर स्टुअर्ट मिल को कट्टर उपयोगितावादी बना दिया। प्रारम्भ में मिल बेन्थम के सिद्धान्त को स्वीकार करके चला। उपयोगितावाद की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए उसने लिखा कि "यह मत जो उपयोगितावाद अथवा अधिकतम सुख के सिद्धान्त को नैतिकता का आधार समझता है, यह मानता है कि प्रत्येक कार्य उसी अनुपात में सही है, जिस अनुपात में वह सुख की वृद्धि करता है और जो भी कार्य सुख से विपरीत दिशा में जाता है वह गलत है। सुख का अर्थ है आनन्द तथा दुःख का अभाव, दुःख का अर्थ है पीड़ा तथा आनन्द का अभाव।" मिल ने बेन्थम के उपयोगितावादी सिद्धांत में संशोधन किया है। मिल के संशोधन के कारण उपयोगितावादी सिद्धांत ने एक अव्यावहारिक रूप ले लिया। मिल के उपयोगितावादी सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित बातें स्मरणीय हैं:-

1. सुखों में मात्रा व गुणों का अंतर - मिल के अनुसार सुखों में मात्रा या गुणों का अंतर होता है। एक सुख में दूसरे सुख की अपेक्षा मात्रा व गुण में अवश्य ही अन्तर रहेगा। उसने लिखा है "एक संतुष्ट होने की अपेक्षा एक असन्तुष्ट मनुष्य होना अधिक अच्छा है। एक सन्तुष्ट मूर्ख बने रहने की अपेक्षा असन्तुष्ट मनुष्य होना अधिक अच्छा है।" "कुछ प्रकार के सुख अन्य प्रकार के कुछ सुखों की अपेक्षा अधिक आवश्यक और अधिक महत्व के हैं।"

2. व्यक्तिगत स्वार्थ तथा सार्वजनिक सुख का अंतर:- मिल ने अपने उपयोगितावाद में व्यक्तिगत स्वार्थ और सार्वजनिक सुख के भेद का प्रकट करने का प्रयास किया है। उसने कहा है "व्यक्ति का अधिक सुख उपयोगितावाद का मापदंड नहीं है बल्कि समष्टि रूप से अधिकतम सुख ही उसका मापदण्ड है।" उपयोगितावाद के अनुसार व्यक्ति को अपने और पराये सुख के बीच इतना पक्षपातहीन होना चाहिए जितना एक निरपेक्ष और उदार दर्शक होता है।

3. सच्चे सुख की प्राप्ति - कुछ सुख अच्छे होते हैं कुछ खराब। नैतिकता के सिद्धांत को निर्धारित करते हुए मिल ने कहा है - "दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा कि तुम अपने साथ करवाना चाहते हो तथा पड़ोसी के प्रति स्नेह भाव रखना ही उपयोगितावादी नैतिकता का सिद्धांत है।"

4. अन्तःकरण पर विशेष बल:- व्यक्ति का अन्तःकरण व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा सार्वजनिक सुख से अधिक प्रभावित एवं प्रसन्न होता है। इसलिए व्यक्ति हित की अपेक्षा समाज के हित का अधिक महत्व है।

—X—